Dr. Sunil Kumar Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date:-21-9-2020
Next class

Psychosexual Development Stages

(२) गुदावस्था (Anal Stage):- मनोलैंगिक विकास (Psychosexual Development) का दूसरा स्तर गुदावस्था (anal stage) है जो करीब जीवन के पहला साल समाप्त होने पर प्रारंभ होता है तथा दूसरा साल की अवधि समाप्त होने तक बनी रहती है। दूसरे शब्दों में, यह अवस्था 2 से 3 साल तक के आयु के बीच की होती है। इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र (erogeneous zone) मुँह से हटकर शरीर के गुदा क्षेत्र (anal Region) में आ जाता है। फलस्वरूप बच्चे मलमूत्र त्यागने से संबंधित क्रियाओं से आनन्द उठाते हैं। इस अवस्था में दो तरह की गुदा क्रियाएं (anal activities) होती है।

गुदा बहिष्कारक क्रियाएं (anal expulsive activities) तथा गुदा धारणात्मक क्रियाएं (anal retentive activities)। गुदा की परिणामात्मक परित्यागात्मक अवस्था में मल-मूत्र त्यागने में शिशु लैंगिक सुख प्राप्त करता है क्योंकि ऐसा करने से उसका शारीरिक तनाव दूर हो जाता है तथा उसे काफी आराम मिलता है। मल-मूत्र त्यागने से शिशु की श्लेष्मल झिल्ली (mucous membrane) काफी उत्तेजित हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप बच्चों में लैंगिक सुख (sexual pleasure) की प्राप्ति होती है। गुदा-धारनात्मक अवस्था में शिशु मल-मूत्र को कुछ देर तक रोककर रख रहते हैं जिससे उनके आंत में (bowel) तथा मूत्राशय (bladder) में एक तरह से हलका तनाव उत्पन्न होता है जिससे भी उन्हें

आनन्द प्राप्त होता है। इन दोनों अवस्थाओं का वर्णन तथा व्यक्तित्व पर अंक पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन इस प्रकार है।

(1) गुदा निष्कासन की अवस्था (Anal expulsion stage):- इससे पहले ऊपर में बताया जा चुका है कि इस अवस्था में शिशु को मल-मूत्र त्याग करने में लैंगिक सुख प्राप्त होता है क्योंकि ऐसा करने से श्लेष्मल झिल्ली (mucous membrane) उत्तेजित हो जाता है जो उसके लैंगिक सुख में एक सक्रिय योगदान करता है। इसके अलावा माता पिता द्वारा उचित स्थान एवं सही समय पर नियमित रूप से मल-मूत्र त्याग करने की प्रशिक्षण (toilet training) भी दी जाती है। इस प्रशिक्षण के दौरान माता-पिता द्वारा अपनायी गयी मनोवृत्ति (attitude) एवं विधियों (methods) का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। जब माता-पिता मल-मूत्र त्यागने के लिए शिशु का खुशामद करते हैं, पुचकारते हैं तथा सीटी बजाते हैं तो इससे शिशुओं में आक्रामकता (aggressiveness) की प्रवृत्ति काफी बढ़ती है। वयस्क होने पर ऐसे शिशुओं में एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व का विकास होता है जिसे गुदा आक्रामक व्यक्तित्व (anal-aggressive personality) कहा जाता है। ऐसे व्यक्तियों के व्यक्तित्व में क्रूरता (cruelty), विनाशिता (destructiveness), विद्वेष (hostility), क्रमहीनता (disorderliness) आदि शीलगुणों की प्रधानता होती है।

Next class.

Scanned with CamScanner